भारत का एक सुप्रसिद्ध हिन्दी कृषि समाचार-पत्र (न्यूज़ पेपर)

खेती दुनिया

www.khetiduniyan.in

Excellence in Agri Info

KHETI DUNIYAN, PATIALA

All Subject to Patiala Jurisdiction.

BOOK POST – PRINTED MATTER

KHETI DUNIYAN

• Issue Dated 15-06-2024• Vol.8 No.24 • H.O. : KD Complex, Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) Ph. : 0175-2214575 • Page : 08 E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

मुजफ्फरपुर, देहरादून की अपेक्षा पठानकोट की लीची का प्रति हैक्टेयर उत्पादन दोगुणा

बंपर लीची : पठानकोट में 35000 टन उत्पादन

पठानकोट ज़िले में इस बार लीची की पैदावार बढ़ी है। बागानों में लीची पकने लगी है। अच्छे सीज़न के कारण इस बार 35 हज़ार मीट्रिक टन लीची की पैदावार का अनुमान है, जो पिछले साल से 3000 मीट्रिक टन अधिक है। पंजाब सरकार लीची पैकिंग के प्रति बॉक्स 50 फीसदी सब्सिडी देगी। सरकार पानी, बिजली की उपलब्धता पर खास ध्यान दे रही है।

पठानकोट ज़िले में 3200 हैक्टेयर से अधिक क्षेत्र में लीची के बागान हैं। प्रमुख रूप से शहर के पास मनवाल, मुरादपुर, खरीफचक्क, कोटली, जमालपुर, भोआ, सुंदरचक्क में लीची के बागान हैं, जिनके जरिये पिछले साल 32000 मीट्रिक टन लीची की पैदावार हुई थी। बागवानी विभाग के मुताबिक, इस बार पैदावार और अच्छी हुई है और 35 हज़ार टन पैदा हुई है। देश के अन्य हिस्सों मुजफ्फरपुर, देहरादून की अपेक्षा पठानकोट की लीची का प्रति हैक्टेयर उत्पादन दोगुणा तक है। यहां प्रति हैक्टेयर 16 मीट्रिक टन लीची का उत्पादन है, जबकि अन्य हिस्सों में यह 8 मीट्रिक टन ही है। एक एकड़ में 40 पेड़ तक होते हैं और 200 से 300 किलो प्रति पेड़ तथा एक एकड़ में कम से कम 6000 किलो लीची की पैदावार है। पठानकोट में लांगी, कोलिया, सीडलेस, शाही और सेंटेड वैरायटी की लीची है। कोलकाता, दिल्ली, अहमदाबाद, पुणे और मुंबई के व्यापारी सीधे पठानकोट पहुंचकर यहां से फ्लाइट और ट्रकों के जरिये हर साल लीची ले जाते हैं। पिछले साल बागवानी मंत्री चेतन सिंह जौड़माजरा ने

पठानकोट से एक प्रतिनिधिमंडल दुब्बई भेजा था, ताकि वहां लीची की खपत और कारोबार का अध्ययन कर लीची एक्सपोर्ट की जा सके।

सरकार लीची के एक्सपोर्ट या देश के भीतर भेजने पर प्रति बॉक्स 50 फीसदी की सब्सिडी उत्पादकों को दे रही है। बागवानी विभाग के अधिकारियों ने बताया कि ज़िले के 10 बड़े लीची उत्पादकों को डेढ़-डेढ़ लाख की सब्सिडी देकर उनके बागानों में कोल्ड स्टोर बनवाए हैं, जहां 3 से 4 मीट्रिक टन लीची स्टोर की जा सकती है। मुरादपुर में राकेश डढवाल ने बताया कि उनके पास 70 एकड़ में लीची का बाग है, जहां 50 फीसदी सब्सिडी लेकर लीची रखने के लिए कोल्ड स्टोर बनवाया है, जहां 3 मीट्रिक टन लीची स्टोर कर सकते हैं। बागवानी विकास अफसर जतिंदर कुमार ने बताया कि लीची बागानों में नहरी पानी और बिजली की उपलब्धता की व्यवस्था की गई है।

सुजानपुर में होगा लीची शो

सरकार सुजानपुर में बनाए गए लीची एस्टेट में 17 और 18 जून को लीची शो आयोजित करेगी। इसमें किसान अपनी लीची की विभिन्न वैरायटी प्रदर्शित करेंगे। लीची व्यापारी भी शो में हिस्सा लेंगे। लीची एस्टेट में पेस्टीसाइड स्टोर भी खोला गया है, जहां से किसानों को फार्मिंग के लिए अच्छी किस्म की दवाईयां उपलब्ध हो सकेंगी। इसके अलावा लीची एस्टेट में आटोमैटिक फॉगिंग मशीन व ट्रैक्टर भी हैं और समय-समय पर किसानों को जागरूक करने व जानकारियां देने के लिए सेमिनार आयोजित किए जाते हैं।

एस.ई.ए. ने अल नीनो के प्रभाव के चलते रैपसीड-सरसों के उत्पादन का अनुमान घटाया

उद्योग निकाय एस.ई.ए. ने प्रमुख उत्पादक राज्यों पर अल नीनो के प्रभाव का हवाला देते हुए फसल वर्ष 2023-24 के लिए देश के

रैपसीड-सरसों के उत्पादन अनुमान को घटाकर एक एकड़ 15.8 लाख टन कर दिया। मार्च में, सॉल्वैंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एस.ई.ए.) ने रैपसीड-सरसों के उत्पादन का अनुमान एक करोड़ 20.9 लाख टन लगाया था। एसोसिएशन ने एक बयान में कहा है कि उत्पादन अनुमान घटाने के बावजूद इसके पिछले साल के एक करोड़ 11.8 लाख टन के स्तर को पार करने की उम्मीद है। अल-नीनो की घटना चिलचिलाती गर्मी की लहरों और फसल पकने के दौरान मिट्टी की कमी में भारी कमी से चिन्हित होती है। एस.ई.ए. ने कहा कि सबसे अधिक उत्पादन करने वाले राज्य राजस्थान में रैप-सरसों का उत्पादन अब फसल वर्ष 2023-24 (जुलाई-जून) में 45.3 लाख टन होने का अनुमान है, जो पहले के 46.1 लाख टन के अनुमान से कम है। इस तरह, उत्तर प्रदेश में उत्पादन कम यानी 17.9 लाख टन, मध्य प्रदेश में कम यानी 16 लाख टन और हरियाणा में कम यानी 11.7 लाख टन रहने की उम्मीद है।

किसानों के हित में जारी

बीजोपचार

अच्छी फसलों का मूल आधार

बीजोपचार के लाभ

★ अधिक अंकुरण

★ अधिक प्रबल पौधे

★ आरंभिक बिमारियों का प्रभावी नियंत्रण

★ स्वस्थ पौधों की संख्या ज्यादा

देश के सभी किसान, पढ़ें होकर होशियार

अच्छी पैदावार तभी होगी, जब बीजों का हो सही उपचार

सवाना सीड्स ने भारत में राइसरीच® फुलपेज® ऐप जारी किया

सवाना सीड्स भारतीय बाज़ार में राइसरीच® फुलपेज® ऐप के बीटा लॉन्च की घोषणा करते हुए उत्साहित है। यह नया एप्लिकेशन फुलपेज राइस क्रॉपिंग सॉल्यूशन के पूरक के लिए डिज़ाइन किया गया है और भारत की कृषि पद्धतियों को बदलने में महत्वपूर्ण प्रगति करने के लिए तैयार है।

भारत में फुलपेज की शुरूआत के साथ, सवाना इस क्षेत्र में खेती के तरीकों को बदलने के प्रति अपने समर्पण को रेखांकित करता है। सीधी बुवाई वाले धान (डी.एस.आर.) के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किया गया, फुलपेज स्मार्टराइस® जेनेटिक्स, स्क्वाड™ बीज उपचार, फुलपेज अद्वितीय आई.एम.आई. हर्बिसाइड टॉलरेंस विशेषज्ञता और अडामा (ADAMA) के वज़ीर हर्बिसाइड को एक साथ लाता है। एक व्यापक चावल फसल प्रणाली, फुलपेज के साथ किसान अपनी धान की खेती को सरल एवं फायदेमंद बना सकते हैं और साथ ही यह पर्यावरण के अनुकूल भी है।

राइसरीच फुलपेज एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसे किसानों को व्यापक चावल के मूल्य श्रृंखला तंत्र से जोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह सूचनाओं के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है और विशेष रूप से डी.एस.आर. संकर धान उगाने में किसानों का मार्गदर्शन करने के लिए तैयार किया गया है, जो व्यक्तिगत कृषि विज्ञान सलाह और सिफारिशें प्रदान करता है।

सेवाओं के समूह में यह पहला अनोखा प्रयास है, जिसे विशेष रूप से धान के किसानों को फुलपेज सीधी बुवाई खेती संबंधित सम्पूर्ण जानकारी एवं रोपाई से सीधी बुवाई वाले धान के परिवर्तन में सहायता करने के लिए तैयार किया गया है।

एशिया पैसिफिक व्यापार प्रमुख अजय राणा ने कहा कि, "राइसरीच ऐप को धान के किसानों के लिए एक समाधान के रूप में डिजाइन किया गया है, जो अपनी चावल की खेती की पद्धतियों में बदलाव लाना चाहते हैं, साथ ही पर्यावरण भी संरक्षित रखना चाहते हैं। सम्पूर्ण कृषि प्रबंधन (बुवाई से कटाई तक), विशेषज्ञों द्वारा सलाह से हम किसानों को पर्यावरण रोधी धान की खेती में सरलतम तरीके से बदलाव लाने में मदद करेंगे।"

यह एप्लीकेशन अब उत्तरी और मध्य भारत के किसानों के लिए एंड्राइड डिवाइस पर उपलब्ध है। इसमें एक कृषि प्रबंधन अनुभाग है, जो किसानों को खेत की तैयारी से लेकर कटाई तक फुलपेज धान की खेती के प्रत्येक चरण के बारे में मार्गदर्शन करता है। यह उनके खेत की स्थितियों के अनुरूप सर्वोत्तम कृषि प्रबंधन की समझ और उस पर सफलतापूर्वक अमल करना सुनिश्चित करता है। यह ऐप अडामा (ADAMA) के वज़ीर के सर्वोत्तम उपयोग पर विस्तृत दिशा-निर्देश भी प्रदान करता है, जो फुलपेज धान की फसल में उपयुक्त

खरपतवारनाशक है और प्रभावी खरपतवार प्रबंधन सुनिश्चित करता है।

राइसटेक के सी.टी.ओ. चकरा शंकरैया ने कहा कि, "राइसरीच हमें भारत भर के लाखों किसानों से डिजिटल रूप से जुड़ने, सहायता प्रदान करने और डी.एस.आर. प्रथाओं में बदलाव को गति देने में सक्षम बनाता है।" "यह भारतीय कृषि में एक नए युग की शुरूआत का प्रतीक है, जो अधिक टिकाऊ और लाभदायक चावल की खेती का मार्ग प्रशस्त करता है।"

अतिरिक्त सुविधाओं में चैट फंक्शन के माध्यम से ग्राहक सहायता शामिल है, जिससे किसान बीज बोने, कीट नियंत्रण, पौधों के पोषण और बहुत कुछ पर मार्गदर्शन के लिए विशेषज्ञों से जुड़ सकते हैं। किसान अपने खेत की सीमाओं और विवरणों को डाल कर अपने ऐप अनुभव को व्यक्तिगत कर सकते हैं, जो अनुकूलित सलाह और रणनीतियों की अनुमति देता है।

सम्पूर्ण मौसम सुविधा स्थान-विशिष्ट अपडेट प्रदान करती है, जिससे किसानों को मौसम की स्थिति के अनुसार अपनी गतिविधियों की योजना बनाने में मदद मिलती है। इसके अलावा, ऐप किसानों और वितरकों के बीच सीधे सम्पर्क की सुविधा प्रदान करता है, जिससे फुलपेज उत्पादों की खरीद की प्रक्रिया सरल हो जाती है।

ऐप में प्रदर्शित किसानों के अनुभव, उनके द्वारा पहले से ही फुलपेज का उपयोग करके प्राप्त लाभों को दर्शाती हैं। इन लाभों में भूजल उपयोग, श्रम लागत और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में महत्वपूर्ण कमी, साथ ही पारम्परिक डी.एस.आर. विधियों की तुलना में बढ़ी हुई पैदावार शामिल है। यह अनुभव किसानों के विश्वास को बढ़ाता है और फुलपेज समाधान के नकारात्मक प्रभाव को उजागर करता है।

राइसरीच ऐप किसानों को सशक्त बनाने के लिए सवाना की प्रतिबद्धता को दर्शाता है, जो आज की सबसे बड़ी कृषि चुनौतियों का समाधान करने वाले नए समाधान प्रदान करता है। किसानों को पर्यावरण अनुकूल खेती के तरीकों की ओर बढ़ने में सहायता करके, सवाना भारत में चावल की खेती में महत्वपूर्ण बदलाव का मार्ग प्रशस्त कर रहा है।

सवाना सीड्स

Savannah

सवाना सीड्स, राइसटेक की सहायक कम्पनी, एक अग्रणी रिसर्च एवं तकनीकी पर आधारित चावल कम्पनी है, जो उच्च पैदावार और श्रेष्ठ गुणों के साथ स्मार्टराइस® विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। किसानों, उपभोक्ताओं और धरती को लाभ पहुंचाने वाली पर्यावरण अनुकूल धान कृषि की दृष्टि के साथ, सवाना सीड्स का लक्ष्य इस क्षेत्र में नई पद्धति का नेतृत्व करना है। सवाना सीड्स के बारे में अधिक जानने के लिए www.savannahseeds.com पर जाएं।

फॉल आर्मीवर्म : मक्के का शत्रु

स्पर्श ठाकुर, सोनिका शर्मा, इंद्रपाल कौर, डी.ए.वी. यूनिवर्सिटी, जालंधर

फॉल आर्मीवर्म (FAW) *(Spodoptera frugiperda)* एक कीटक प्रजाति है, जो 80 से अधिक फसल प्रजातियों के नुकसान का कारण बनती है, जैसे कि मक्का, चावल, ज्वार और दालों के साथ-साथ सब्ज़ी की फसलों और कपास पर भी नुकसान पहुंचाती है।

यह पहली बार 2016 में अफ्रीका में जानलेवा कीट के रूप में देखा गया था और जल्द ही एक

साल के भीतर 40 अफ्रीकी देशों में फैल गया। भारत में, यह कीट मई 2018 में कर्नाटक में रिपोर्ट किया गया था और एक साल के भीतर, यह देश के लगभग सभी राज्यों में घुस गया था। यह अगस्त 2019 में पहली बार दिखाई दिया था और सितंबर के अंत तक, यह कीट विभिन्न ज़िलों में देर से बोये गए मक्के में पाया गया था। वर्तमान में खरीफ फसल के मौसम में, इसका प्रकोप जालंधर, होशियारपुर, रोपड़, पठानकोट, पटियाला और फतेहगढ़ साहिब ज़िलों में दर्ज किया गया है।

जीवन-चक्र : गर्मियों में फॉल आर्मीवर्म का जीवन-चक्र 30 दिन तक, बसंत में 60 दिन तक और सर्दियों में 80 से 90 दिन तक चलता है। अपने एक जीवन काल में एक मादा आमतौर पर लगभग 1500 अंडे देती है।

अंडा : फॉल आर्मीवर्म का अंडा गोलाकार होता है और इसका व्यास लगभग 0.4 मिलीमीटर होती है। मादाएं पत्तियों के नीचे अंडे रखने को पसंद करती हैं, लेकिन उच्च जनसंख्या में वे उन्हें कहीं भी रख सकती है। गर्म मौसम में, अंडे कुछ दिनों के भीतर कीड़ों में बदल जाते हैं।

लार्वा : अंडे से निकल कर पूर्ण विकास में बदलने के लिए लार्वा छः विभिन्न चरणों से गुजरता है। प्रत्येक का भौतिक रूप और आकार में थोड़ा अंतर होता है। कीड़े की प्रक्रिया तापमान पर निर्भर करती है और 14 से 30 दिनों तक चलती है। यह सबसे हानिकारक जीवन चरण होता है, क्योंकि कीड़े के पास काटने वाले मुंह के अंग होते हैं, जो फसल को नुकसान करते हैं।

प्यूपा : इसके बाद प्यूपा चरण आता है, तब कीड़े मिट्टी में रेशे के रूप में बनाए जाने वाले कोकून में 7 से 37 दिनों तक भूमि के नीचे रहते हैं। प्यूपा चरण की अवधि और सर्वाधिक तापमान पर आधारित होती है।

वयस्क : एक बार उद्भवित होने के बाद प्रजनन करना तथा अंडे देने के लिए 10 दिन तक जीते हैं तथा कभी-कभी इनका जीवन काल 21 दिन तक भी होता है। मादा अपने जीवन के प्रारंभिक दिनों में अपने अधिकांश अंडे देती है।

कीट के हमले की पहचान :

* मक्के की पत्तियों के किनारे में छोटे छेद होना, इसके हमले का संकेत है, क्योंकि जब कीड़ा अपने दूसरे चरण में प्रवेश करता है, तो उसका भोजन पत्तियां भी होती है, जिसका कारण पत्तियों में छेद बन जाते हैं।

* जब कीड़ा बड़ा हो जाता है, तो यह पत्तियों को बड़े स्तर पर नुकसान करता है, क्योंकि इस समय इसका भोजन विशेष रूप से पत्तियां ही होती हैं। तब यह अधिक मात्रा में मल का उत्पाद करता है, जिससे पत्तियों को हानि होती है।

* जब मक्के की फसल में मक्का बनना शुरू होता है, तब इसके फूल बहुत ही संवेदनशील होते हैं, तब यह कीड़ा उनके फूलों को नष्ट कर देता है, जिसके कारण मक्का तैयार नहीं हो पाता और फसल की पैदावार कम हो जाती है।

प्रबंधन और नियंत्रण :

* मक्के की बुवाई के समय फॉल आर्मीवर्म की गतिविधि कम करने के लिए मक्के को जल्दी या देर से बोना चाहिए।

* परजीवी मोथ की जनसंख्या को नियंत्रण करने के लिए फेरोमेन जाल का उपयोग करना चाहिए।

* फॉल आर्मीवर्म के जीवन-चक्र को कम करने के लिए लगातार मक्के को उसी खेत में नहीं बोना चाहिए और फसल-चक्र को अपनाना चाहिए।

* फॉल आर्मीवर्म की जनसंख्या को नियंत्रण करने के लिए कीटनाशक जैसे कि स्पाइनेटरम 11.7 प्रतिशत, चियोरेंट्रानिलिप्रोले 18.5 प्रतिशत का प्रयोग कर सकते हैं।

* बुवाई से पहले बीज उपचार थायोमिथोक्सम 19.8 प्रतिशत करने से फॉल आर्मीवर्म की गतिविधि को रोका जा सकता है। ❑

लहसुन की उन्नत खेती

डॉ. मुरारी लाल, डॉ. ममता फौगाट, एवं डॉ. मीनू,
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र, भिवानी–127021

लहसुन एक बल्ब वाली फसल है। इसमें एलीसिन नामक तत्व पाया जाता है, जो अच्छा बैक्टीरिया रोधक, फफूंद रोधक एवं अंटीऑक्सीडेंट के तौर पर जाना जाता है, जिसके कारण इसकी एक खास गंध एवं तीखा स्वाद होता है। यह आयुर्वेद और रसोई दोनों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण फसल है। इसका इस्तेमाल आचार, चटनी, मसले तथा सब्जियों में किया जाता है। इसका इस्तेमाल हाई ब्लड प्रेशर, पेट के विकारों, पाचन विकृतियों, फेफड़ों के लिए, कैंसर एवं गठिया की बीमारी, नपुंनसक्ता तथा खून की बीमारी के लिए होता है। इसमें प्रोटीन, कारबोज, खनिज पदार्थों, लोहा के अलावा विटामिन ए, बी, सी एवं सल्फुरिक एसिड विशेष मात्र में पाए जाते है।

उन्नत किस्में :

जी–1 (G-1) : इसकी गांठें सफेद, सुगठित तथा मध्यम आकार की होती है। प्रति गांठ 15–20 कलियां पाई जाती हैं। ये किस्म बुवाई के 160–180 दिन बाद तैयार हो जाती है। इसकी पैदावार 40–44 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।

एच.जी.–17 (HG-17) : इसकी गांठें सफेद, सुगठित व 25–30 ग्राम वजन वाली होती हैं। प्रति गांठ 28–32 कलियां पाई जाती हैं। यह किस्म हरियाणा राज्य के लिए अच्छी पैदावार देने वाली है। इसकी औसत पैदावार 50 क्विंटल प्रति एकड़ बुवाई के 160–170 दिन बाद मिलती है।

भूमि की तैयारी : दो तीन जुताई करके खेत को सही तरह से समतल करें। क्यारियां एवं सिंचाई की नालियां बनाएं।

बुवाई का उपयुक्त समय :

सितम्बर अंतिम सप्ताह से अक्तूबर तक।

बीज की मात्रा : इसकी खेती के लिए 1.5 क्विंटल से 2 क्विंटल स्वस्थ कलियां प्रति एकड़ बीज की मात्रा है।

बुवाई विधि : कतारों से कतारों की दूरी – 15 सैंटीमीटर

कतारों से कलियों की दूरी – 8–10 सैंटीमीटर

बुवाई लगभग 5–6 सैंटीमीटर गहरी करें और कलियों का नुकीला भाग ऊपर रखें। बुवाई के बाद कलियों को 2 सैंटीमीटर गहरी मिट्टी की तह से ढक दें।

खाद एवं उर्वरक : बीस टन गोबर की सड़ी हुई खाद प्रति एकड़ की दर से खेत की तैयारी के समय मिट्टी में अच्छी प्रकार मिलाएं। 35 किलोग्राम यूरिया, 125 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट और 17 किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ रोपाई के समय मिट्टी में अच्छी प्रकार मिलाएं। शेष 35 किलोग्राम यूरिया बुवाई के 30–45 दिन बाद दें। यूरिया खाद बुवाई के 60 दिन के अंदर ही दे देनी चाहिए अन्यथा पतियों की अधिक वृद्धि से गांठों का आकार छोटा और कलियां पतली होंगी।

लहसुन की अच्छी पैदावार के लिए उपरोक्त खाद एवं उर्वरकों की मात्रा के अलावा 15 ग्राम यूरिया और 5 ग्राम जिंक सल्फेट को प्रति लीटर पानी में घोल कर बुवाई के 30–45 तथा 60 दिन के बाद 3 छिड़काव करें।

सिंचाई : सर्दियों में सिंचाई 10–15 दिन के अंतराल पर करें। परंतु गर्मियों में मार्च के पश्चात् हर सप्ताह सिंचाई करें। फसल पकाई के समय भूमि में ज्यादा नमी नहीं होनी चाहिए, अन्यथा पतियों की वृद्धि पुनः शुरू हो जाएगी और कलियों में अंकुरण हो जाता है जिससे भंडारण क्षमता कम हो जाती है।

अन्तः कृषि क्रियायें एवं खरपतवार नियंत्रण : 2–3 बार उथली गुड़ाई करके खरपतवार निकालें क्योंकि लहसुन की जड़ें कम गहराई तक जाती हैं। बुवाई 8–10 दिन बाद जब पौधे सुव्यवस्थित हो जाएं और खरपतवार निकलने लगे तब स्टोम्प 30% 1.3–1.7 लीटर प्रति एकड़ का 250 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

फसल की कटाई और खुदाई : गांठों के पूर्ण विकसित होने पर पौधों की पत्तियों में पीलापन आने व सूखना शुरू होने पर सिंचाई बंद कर दें। इसके कुछ दिन बाद लहसुन की खुदाई करें और गांठों को तीन–चार दिन तक छाया में सुखाने के बाद पतियों को गर्दन से 2–3 सैंटीमीटर छोड़कर काट दें। 25–50 गांठों को बांधकर गुच्छियां बना लें।

लहसुन का भंडारण : गुच्छियों के रूप में या कंदों की टाट की बोरियों में या लकड़ी की पेटियों में रख कर सकते है। भंडारण शुष्क, हवादार एवं अंधेरे वाले कमरों में करना अच्छा साबित हुआ है। शीतग्रह में इसका भंडारण 0–2 डिग्री सेन्टीग्रैड तापक्रम व 65–75% आर्द्रता पर 3–4 माह तक कर सकते हैं। ❑

यूं तैयार होगा बीज से पौधा

हर पौधे को तैयार करने के लिए पहली जरूरत होती है एक सही बीज का चुनाव। फिर समझना कि उसे कैसे बोना है, कैसे उसकी देखभाल करनी है। इन्हीं सवालों के जवाब हमारे विशेषज्ञ से जानते हैं...

बीज से पौधा बनाने की प्रक्रिया कितनी सुखद होती है, पर इस प्रक्रिया के एक–एक स्तर पर काफी सावधानी बरतनी होती है, नहीं तो सारी मेहनत बर्बाद हो जाती है। इसलिए इन सावधानियों को समझकर अपने जेहन में बसा लें, जिससे आप इस प्रक्रिया का आनंद ले पाएं और तैयार कर पाएं अपने पसंदीदा बीज से सुंदर–सा पौधा।

अच्छे बीज का ऐसे करें चुनाव...

पहले चरण में आप बीज को रंग, आकार और वज़न आदि के अनुसार चुन लें।

दूसरे चरण में इन चुने हुए बीजों को पानी भरे एक कांच के गिलास में डाल दें, फिर गिलास थोड़ा–सा हिलाएं। इससे कुछ बीज तैरते रहेंगे और कुछ डूब जाएंगे। अब जो बीज पानी में डूब गए हैं, उन्हीं को बोएं, क्योंकि वे ही स्वस्थ हैं।

बीज बोने का सही तरीका

* बीज के लिए नम मिट्टी अच्छी होती है। इसलिए बीज बोने से कुछ घंटे पहले ही मिट्टी को सींच लें, ताकि उसमें नमी बनी रहे।
* बीजों को कतारों में बोएं। इससे उन्हें फैलने के लिए पर्याप्त जगह मिलेगी।
* महीन बीज को महीन रेत के साथ मिला कर बोएं।
* बेहतर अंकुरण के लिए बीज को ज्यादा गहराई में न बोएं। हालांकि बीन्स, मटर व मक्का जैसे खुले स्थान पर बोए जाने वाले बीजों को बोकर एक इंच मोटी भूसी से ढक दें और अंकुर निकलने पर हटा दें, क्योंकि इन्हें चिड़ियां/चूहे नुकसान पहुंचा सकते हैं।
* फूलों के बीजों को कोकोपीट में बो सकते हैं। इसके लिए कोकोपीट को 12 घंटे के लिए पानी में भिगोएं। फिर क्यारीनुमा समतल जगह पर 1 से 1.5 इंच मोटी कोकोपीट बिछा दें। बीज छिटकें और ऊपर से पॉलीथीन ढक दें। 6 दिन बाद पॉलीथीन हटाएं। पर इस दिन पानी न देकर अगले दिन से पानी दें।

ऐसे रखें बीज का ख्याल...

* बीज को सूखने और गलने से बचाने के लिए, गमले या क्यारी में इतना पानी दें, जिससे मिट्टी की ऊपरी परत में 1 से 1.5 इंच तक नमी बनी रहे। पानी देने के लिए महीन छेद वाले फव्वारे का उपयोग करें।
* बीज को बढ़ने के लिए पोषण मिल सके, इसलिए गमलों को पर्याप्त रोशनी में रखें।
* चिड़ियों और चूहों से बचाने के लिए गमले/क्यारी के चारों तरफ सूखी लकड़ियों की आड़ बना दें।

आर.एस. यादव, बागवानी विशेषज्ञ

खेती दुनिया

KHETI DUNIYAN

मुख्य कार्यालय

के.डी. कॉम्पलैक्स, गऊशाला रोड, नजदीक शेरे पंजाब मार्केट, पटियाला - 147001 (पंजाब)

फोन : 0175-2214575
मो. 90410-14575
E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

वर्ष : 08 अंक : 24
तिथि : 15-06-2024

सम्पादक
जगप्रीत सिंह

मुख्य शाखाएं

पटियाला
फोन : 0175-2214575
मो. 90410-14575

मुम्बई

दिल्ली

लुधियाना

बण्ठिडा

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

कम्पोजिंग
एक्ता कम्प्यूटरज़ पटियाला

Editor, Printer & Publisher **JAGPREET SINGH**
Printed at **Vargenia Printers**, Sher-e-Punjab Market, Gaushala Road, PATIALA &
Published at Patiala for Prop. **JAGPREET SINGH**

ज्यादा दाम देने के बाद भी गेहूं की सरकारी खरीद 29 प्रतिशत कम

आटा महंगा होगा; गेहूं भंडार 16 साल में सबसे कम, विदेश से मंगाना पड़ेगा

गेहूं एक साल में 8 प्रतिशत महंगा हुआ है। पिछले 15 दिन में ही कीमतें 7 प्रतिशत बढ़ चुकी हैं, जो अगले 15 दिन में 7 प्रतिशत और बढ़ सकती हैं। दरअसल, गेहूं के सरकारी भंडारों में हर वक्त तीन महीने का स्टॉक (138 लाख टन) होना चाहिए। मगर इस बार खरीद सत्र शुरू होने से पहले यह सिर्फ 75 लाख टन था। इससे पहले 2007-08 में 58 लाख टन रहा था, यानी अभी यह 16 साल के न्यूनतम स्तर पर है।

2023 में यह 84 लाख टन, 2022 में 180 लाख टन और 2021 में 280 लाख टन स्टॉक था। रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद से दुनिया में गेहूं का सरकारी स्टॉक घटता जा रहा है। हालांकि, सरकार अभी तक कुल 264 लाख टन गेहूं खरीद चुकी है, लेकिन सरकारी लक्ष्य 372 लाख टन का है। खरीद का समय भी 22 जून तक बढ़ा दिया है, लेकिन खरीद केन्द्रों में नगण्य गेहूं ही आ रहा है। ऐसे में 'मुफ्त अनाज योजना', बीपीएल की जरूरतें पूरी करने के लिए तत्काल गेहूं का आयात करना पड़ सकता है।

6 साल बाद ये नौबत... जरूरी स्टॉक और फ्री अनाज योजना जैसी जरूरतों के लिए तत्काल आयात करना होगा

इसलिए बढ़ेंगे दाम... प्रति एकड़ पैदावार 5 क्विंटल घटी, स्टॉक लिमिट से व्यापारियों के पास पुराना गेहूं नहीं बचा

* गेहूं के फसल-चक्र के दौरान कोहरे और हवा के कारण इसकी प्रति एकड़ उत्पादकता 5 क्विंटल तक कम हो गई। सामान्य स्थिति में पैदावार 20 क्विंटल तक होती है। मध्य प्रदेश में पिछली बार से 22.67 लाख टन कम खरीद हुई है।

* आटे के बढ़ते दामों को थामने के लिए सरकार ने व्यापारियों के लिए स्टॉक लिमिट लगा दी थी। वे 5000 क्विंटल से ज्यादा का भंडारण नहीं कर सकते थे। नतीजतन, व्यापारियों के पास गेहूं नहीं है। हर साल उनके पास पुराना गेहूं रहता है। इसलिए वे भी ज्यादा गेहूं खरीद रहे हैं।

* सरकार ने गेहूं के दामों पर नियंत्रण के लिए एक साल में कई बार गेहूं ओपन मार्केट में बेचा। इससे भी सरकार के पास स्टॉक में कमी आई।

* सैंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सी.एम.आई.ई.) के अनुसार देश में 2023-24 के दौरान कुल 11.2 करोड़ मीट्रिक टन गेहूं की पैदावार होने का अनुमान है, जो पिछले साल करीब 11 करोड़ मीट्रिक टन था। यानी पैदावार 20 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ने का अनुमान है।

* भारत ने आखिरी बार आस्ट्रेलिया और यूक्रेन से 2017-18 में 15 लाख टन गेहूं आयात किया था।

गेहूं की सरकारी खरीद में ये पिछड़े

राज्य	2024-25	लक्ष्य	अंतर
यू.पी.	9.23	60	-50.77
मध्य प्रदेश	48.30	80	-31.70
राजस्थान	8.18	20	-11.82
*कुल	264.74	372	-107.26

आंकड़े लाख टन में, *कुल में अन्य राज्य भी हैं।

* सरकार ने गेहूं के दामों पर नियंत्रण के लिए एक साल में कई बार गेहूं ओपन मार्केट में बेचा। इससे भी सरकार के पास स्टॉक में कमी आई। 2021-22 में कुल 80 लाख टन, 2022-23 में 55 लाख टन और 2023-24 में 5 लाख टन गेहूं का निर्यात किया था।

15 दिन में 3 रुपए बढ़ सकते हैं दाम

सुनील अग्रवाल, फ्लोर मिल एसोसिएशन, भोपाल के अनुसार मिल वाले राखी से शुरू होने वाले त्योहारी सीज़न मन से पहले सरकारी स्टॉक की ओपन मार्केट में नीलामी का इंतजार कर रहे हैं। खुले बाज़ार में गेहूं 2600-2700 रुपए क्विंटल है। ऐसे में 15 दिन में दाम 3 रुपए बढ़ सकते हैं। महंगा गेहूं खरीदकर बना आटा 30-31 रुपए किलो बेचना पड़ेगा। अभी 38 रुपए है।

4 ज़िलों में नरमे का रकबा गिरा, बठिंडा में 8 साल में सबसे ज्यादा

पंजाब में गुलाबी सुंडी, खराब कीटनाशक की मार से इस बार नरमे का रकबा 79 हजार हैक्टेयर घटा

पंजाब में नरमे के घटते रकबे ने कृषि विभाग के राज्य में खेती आंकड़े बिगाड़ दिए हैं। पानी की किल्लत को लेकर विभाग धान का रकबा घटाने की तैयारी में था, लेकिन अब नरमे का रकबा घटने से धान का रकबा बढ़ जाएगा। सूबे में 2023 में नरमे का रकबा 1.69 लाख हैक्टेयर था, जो इस बार कम होकर 96 हज़ार हैक्टेयर तक सिमट गया है। यह पिछले साल के मुकाबले 79 हज़ार हैक्टेयर कम है। इसका मुख्य कारण नरमे पर गुलाबी व सफेद सुंडी का हमला, घटिया बीज की बिक्री, घटिया कीटनाशक इस्तेमाल होना और खराब फसल का मुआवजा न मिलना है। ऐसे में किसान धान ज्यादा उगाने की ओर रुख कर सकते हैं। इससे सूबे में धान का रकबा बढ़ेगा। किसान बासमती, मक्की और मूंगी आदि फसलों को भी उगाएंगे। पंजाब में 11 जून से धान रोपाई का सीज़न शुरू हो गया है। ऐसे में 8-8 घंटे बिजली सप्लाई मिलेगी। मुक्तसर, फाज़िल्का, बठिंडा और मानसा में पिछले साल की अपेक्षा नरमे के अन्तर्गत क्षेत्रफल में भारी कमी आई है। फाज़िल्का के एग्रीकल्चर डेवलपमैंट ऑफिसर बलदेव सिंह का कहना है कि मुख्यतौर पर गुलाबी सुंडी के हमले और फसल का सही भाव न मिलने के कारण किसानों का इस बार कपास की फसल की ओर रुझान कम होकर अन्य फसलों की ओर बढ़ा है। बठिंडा में नरमे का रकबा गिरकर पिछले आठ साल में सबसे निचले स्तर पर आया है।

किस क्षेत्र में कौन-सी फसल पैदा हो, सरकार के पास रोडमैप नहीं

बी.के.यू. एकता सिद्धूपुर बठिंडा के प्रधान शिंगारा सिंह मान का कहना है कि गुलाबी सुंडी, उचित मूल्य न मिलने से नरमे का क्षेत्रफल कम होने का सबसे बड़ा कारण सरकार की किसान विरोधी पॉलिसी है। खेती नीति में ये स्पष्ट होना चाहिए कि किस क्षेत्र में कौन सी फसल पैदा हो, इस बारे में सरकार के पास कोई रोडमैप नहीं है। वहीं फाज़िल्का के गांव बेगावाली के किसान अश्विनी स्वामी का कहना है कि बीते वर्ष गुलाबी सुंडी के हमले से हुए नुकसान के कारण उन्हें काफी क्षति झेलनी पड़ी। इसके चलते इस बार वह कपास की फसल की उपेक्षा दूसरी फसलों को तरजीह दे रहे हैं। गांव केरिया के किसान मनोज कुमार ने बताया कि कपास काभाव कम व खर्चा ज्यादा होने के कारण किसानों का फसल से मोह भंग हो गया है। इस बार उन्होंने कपास की फसल की बुवाई न करने का फसला लिया है।

कब कब घटा नरमे का रकबा

साल	रकबा
2018-19	2.68
2019-20	2.48
2020-21	2.51
2021-22	2.50
2022-23	2.48
2023-24	1.69
2024-25	0.96

कब-कब बढ़ा धान का रकबा

साल	रकबा
2018-19	31.02
2019-20	31.43
2020-21	31.49
2021-22	31.43
2022-23	31.67
2023-24	32.92
2024-25	32 से बढ़ेगा

"डॉ. जसवंत सिंह, डायरैक्टर कृषि विभाग पंजाब के अनुसार इस बार नरमे का रकबा ज्यादा घटा है। इसकी मुख्य वजह पिछले साल बारिश से बीज की क्वालटी खराब होना, गुलाबी सुंडी का हमला और अन्य कारण हैं। अब इस रकबे में धान न बढ़े, इसलिए बासमती, मक्की या मूंगी की फसलें उगाने के लिए प्रयास करेंगे।"

बीज कानून पाठशाला

तृतीय विश्वयुद्ध - भुखमरी के कारण

आर.बी. सिंह, एरिया मैनेजर (सेवानिवृत), नेशनल सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान), सम्प्रति – 'कला निकेतन', ई–70, विथिका 11, जवाहर नगर, हिसार–125001 (मो. 94667–46625)

आर.पी. सिंह, सहायक महाप्रबंधक (सेवानिवृत), नेशनल सीड्स कारपोरेशन लिमिटेड (भारत सरकार का संस्थान), सम्प्रति – शिवछाया, 320, सुन्दर नगर, हिसार (मो. 97290–62567)

श्री सचिन बोद्रियाँ प्रधान सम्पादक कृषक जगत ने 01.04.2024 के अंक में प्रकाशित किया कि "क्या जैविक खेती की होड श्रीलंका जैसा संकट ला सकती है।" अवश्य, हम इससे सहमत है, क्योंकि अगला विश्वयुद्ध किसी क्षेत्र को हथियाने के लिए नहीं होगा, बल्कि भुखमरी के कारण होगा।

भारत विभाजन के समय देश की आबादी मात्र 34 करोड़ थी, जबकि आज यह 140 करोड़ है, यानि पहले की अपेक्षा 4.11 गुणा ज्यादा और उत्पादन 50 मिलियन टन के बजाय 330 मिलियन टन यानि 6.6 गुणा बढ़ा है। उस समय गेहूं पी.एल.-480 स्कीम के तहत अमेरिका से मंगवाया जाता था, लेकिन

अब हम अपनी जनता का पेट भरने के बाद कुछ मात्रा में निर्यात भी कर रहे हैं और यह सब उर्वरक, कीट एवं कवकनाशी तथा उच्च तकनीकी के बीजों के प्रयोग से ही सम्भव हुआ है।

कृषि की योजनाएं मंत्रालयों में बनती हैं, किसानों के पसीने से निखरती हैं, मज़दूरों के हाथों में आकार लेती हैं और खेतों व मैदानों में चलती हैं, यानि खेती किसानी करने एवं उत्पादन लेने के लिए योजनाओं के अलावा कृषि योग्य भूमि भी जरूरी है। पिछले 20 वर्षों में जीवनशैली में काफी परिवर्तन आया है। गांवों-शहरों में खेलों को प्रोत्साहन दिया गया, अत: प्रत्येक गांव में 20-25 एकड़ भूमि स्टेडियम बनाने में चली गई। स्कूल, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, शहरों की घनी बस्तियों के बजाय बाहरी एरिया में गये, उन्होंने खेती योग्य भूमि का अधिग्रहण किया, साथ ही सरकारी नीतियों के कारण विद्यार्थियों के खेल-कूद के लिए मैदानों के लिए भूमि ली। जो शादियां गली-मौहल्ले, पंचायत भवन, धर्मशाला में हो जाती थी, उनके लिए 5-5 एकड़ में एक-एक शहर कस्बों में कई विवाह स्थल बनाए। उनके लिए भूमि अधिग्रहित की गई। विकास की ऊंची उड़ान भरने के लिए सड़कों का जाल बिछाया गया और हाईवे में कृषि योग्य भूमि ली गई। बढ़ती आबादी के अनुसार नये और बड़े अस्पताल, कल कारखाने, मण्डी कमेटियां, बस अड्डे, जनता को बसाने के लिए नई कालोनियां, नये सैक्टर, औद्योगिक सैक्टरों के लिए भूमि ली गई। अत: कृषि योग्य भूमि घटी है और जनसंख्या वृद्धि के कारण वारिसों में भूमि बंटवारे के कारण जोत घट रही है। बढ़ती जनसंख्या का बोझ भारत के अस्तित्व को खतरा है। यद्यपि भारत सरकार जनसंख्या नियंत्रण के लिए जन-चेतना विकसित कर रही है, परन्तु उठाये गये कदम पर्याप्त नहीं है और बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त उत्पादन में बाधा आ रही है और उसका दुष्परिणाम है कि भुखमरी बढ़ रही है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि भोजन प्राप्त करना हर प्राणी का मूलभूत अधिकार है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी कहा है कि पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हर व्यक्ति को भोजन चाहिए। भूखे व्यक्ति को रोटी ही भगवान होती है। भूख इन्सान को तड़पाती है, बिलबिलाती है। भूख इन्सान की रूह को कंपा देती है। यह सुरसरा जन मानस में आक्रोश को पनपाती है। भुखमरी के कारण विकास के दावे झूठे पड़ जाते हैं। भुखमरी के कारण जनता में हाहाकार मच जाती है। संसार में प्रति वर्ष भुखमरी के आगोश में न जाने कितने दूध मुँहे बच्चे, युवा तथा बुजुर्ग समा जाते हैं। इन अभागों को अपने आगोश में समाने के पूर्व क्रुरातिक्रूरकालदेव भी शरमा जाता है, दु:खी एवं द्रवित होता होगा। भूख गोली की तरह ही लगती है। गोली लगने से खून निकलता है और मनुष्य की मृत्यु हो जाती है। भूख से खून नहीं निकलता परन्तु तड़पन गोली जैसी ही होती है। भूख से व्यक्ति तुरन्त नहीं मरता, बल्कि तड़पता है, बिलबिलाता है, बिलखता है और अन्तोगत्वा मौत को वरणा कर लेता है।

आजकल किसानों द्वारा अधिक उत्पादन की होड़ में वैज्ञानिकों द्वारा सुझाई गई मात्रा से अधिक उर्वरक, कीटनाशी, कवकनाशी, निन्दानाशी के रूप में भूमि रसायन की मात्रा बढ़ाई जा रही है, जो भूमि एवं मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही नहीं, घातक साबित हो रहे हैं। वातावरण दूषित हो रहा है, साथ ही भूमि के लाभकारी कीट नष्ट हो रहे हैं तथा भूमि के अन्दर पानी में विषाक्तता बढ़ रही है। भारत ही नहीं विश्व में यह अत्यन्त विचारणीय विषय बन रहा है और इस खतरे से बचने के लिए प्राकृतिक खेती, जैविक खेती या रसायन रहित खेती को वैकल्पिक आधार माना जा रहा है। सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं सरकारें प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए बहुत ज़ोर दे रही है तथा सरकार इस दिशा में विभिन्न योजनाएं ला रही है, परन्तु यह सब स्वैच्छिक है और बाध्यकारी नहीं है। भारत की आज की परिस्थितियों में जैविक खेती अपनाना उचित कदम सिद्ध नहीं होगा। विश्व ख्याति लब्ध बौनी गेहूं की किस्मों के जनक तथा नोबल पुरस्कार प्राप्तकर्ता डॉ. नोरमन ई० बोरलोग ने बताया कि "खेती में कीटनाशी, कवकनाशी, निन्दानाशी तथा उर्वरकों के रूप में प्रयोग होने के कारण रसायन से आई विषाक्तता के कारण उतने लोग नहीं मरेंगे, जितने लोग रसायन रहित खेती से आये उत्पादन में कमी के कारण भुखमरी से मरेंगे।" भुखमरी एक विभिषिका है, क्योंकि :

विभुक्षताम किम न करोती पापम्।
क्षीण नरा निष्करूणा भवन्ति।

अर्थात् भूखा व्यक्ति अपने पेट की आग बुझाने के लिए कोई भी पाप कर सकता है और कमज़ोर व्यक्ति निर्दयी हो जाता है। मेरा तो मत है कि भूखा आदमी पाप ही नहीं अपराध भी कर सकता है। भुखमरी के कारण पाप होंगे और

अपराध का रूप लेंगे। भुखमरी के कारण बलवे होंगे और अधिक बड़े होने पर उपद्रव होंगे, परन्तु जब यह राष्ट्रव्यापी और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होंगे, तो यह विश्वयुद्ध का रूप धारण करेंगे।

पिछले 2 विश्वयुद्ध शक्तिशाली देशों ने अपनी धाम जमाने के लिए परमाणु बमों और एक सैन्य बल द्वारा लड़े गए, परन्तु तीसरा विश्वयुद्ध - भुखमरी के कारण होगा और उससे छुटकारा पाने के लिए प्रक्षेपास्त्र, अग्नि, पृथ्वी मिसाइल, एटम बम काम नहीं आयेंगे, बल्कि उत्पादन बढ़ाना ही एक मात्र उपाय होगा। उर्वरक, कीट एवं कवकनाशी के अलावा बीज उत्तम बीज, प्रमाणित बीज, चरित्रवान बीज ही उत्पादन वृद्धि में अधिक योगदान दे सकेगा।

उर्वरक, कीट व कवकनाशी के रूप में अधिक रसायन के प्रयोग को दोषी ठहराया जाता है, परन्तु इसके लिए कीट कवकनाशी कम्पनियां धन कमाने के निमित्त हर दिन नये उत्पाद निकालती हैं। दूसरा व्यापारी वर्ग अधिक रसायन डालने के लिए किसानों को उकसाते हैं और सबसे महत्वपूर्ण है, रसायनों के निर्माण में रोक लगाने के साथ ही अशिक्षित, अर्धशिक्षित किसान को अधिक रसायन के उपयोग से होने वाली मानव एवं भूमि के स्वास्थ्य में आने वाली क्षति के प्रति सचेत किया जाए। अधिक उत्पादन लेने की होड़ में किसान आवश्यकता से अधिक रसायनों का प्रयोग करता है। अत: हर मौसम में सैमीनार, गोष्ठियों, खेत प्रदर्शनों तथा अन्य ऑडियो विजूयल माध्यम (Audio-Visual Medium) (श्रव दृश्य साधनों) द्वारा किसानों में जागरूकता लाई जाए कि वे कीटनाशी, कवकनाशी, निन्दानाशी निर्माता कम्पनियों तथा कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा निर्धारित मात्रा से अधिक न डालें और प्रत्येक फसल में अनुमोदित मात्रा से ज्यादा न डालें। इसके अलावा खेती की उर्वरा शक्ति बढ़ाने और कवक तथा कीटनाशी नियंत्रण के लिए जैविक विधियों का प्रयोग कर समस्या पर निजात पाई जाए, ना कि जैविक खेती की होड़ में श्रीलंका एवं नेपाल जैसे देशों की तर्ज पर उर्वरकों, कीटनाशियों के आयात, उत्पादन एवं प्रयोग पर प्रतिबंध लगा कर उत्पादन को प्रभावित कर भुखमरी के कागर पर ललाया जाए और जनता द्वारा फजीहत करवाई जाए और उसके परिणामस्वरूप पनपे उपद्रव से राष्ट्राध्यक्षों को देश छोड़ना पड़े। ❑

नई पहल से न केवल देश की अर्थव्यवस्था सुधरी बल्कि जैव विविधता का भी संरक्षण हो रहा

इक्वाडोर : किसानों ने पक्षियों से परेशान होकर खेती छोड़ी, खेतों को बर्ड रिजर्व में बदल दिया, टूरिज्म में अब किसानी से ज्यादा कमाई हो रही है

दक्षिण अमेरिकी देश इक्वाडोर में पक्षियों से परेशानी के कारण किसान खेती छोड़ रहे हैं। वे अब इसके बजाए खेतों पर अभ्यारण्य (बर्ड रिजर्व) बना रहे हैं। इससे उनके खेत पक्षी पर्यटन (बर्ड टूरिज्म) के रूप में विकसित हो रहे हैं। इन नए पक्षी अभ्यारण्यों को देखने देश-विदेश के हज़ारों पर्यटक आ रहे हैं। इस बदलाव से न केवल उनकी आमदनी में बढ़त हो रही है, बल्कि जैव विविधता का भी संरक्षण हो रहा है। बीते 3 सालों में 1500 से अधिक किसानों ने पारम्परिक खेती छोड़ कर अपनी ज़मीन को पक्षी अभ्यारण्य में बदल दिया है।

फावीआन लूना, जो पहले टमाटर की खेती करते थे, ने अपने 120 हैक्टेयर के खेत को आलाम्बी रिजर्व में बदल दिया है। यह अभ्यारण्य कई प्रकार की हमिंगबर्ड प्रजातियों को आकर्षित करता है, जिसमें एंडियन एमरल्ड भी शामिल है। इसी प्रकार, डोरिस चिलाल्बा और सर्जियो बसांटेस ने अपने खेत को माशपी अमगुसा रिजर्व में बदला है, जो 260 से अधिक पक्षी प्रजातियों का घर है।

तीन साल में पक्षियों की प्रजातियां बढ़ कर 1600 से भी ज्यादा हो गई

किसानों द्वारा पक्षी अभ्यारण्य की शुरूआत करने के कारण इक्वाडोर में पक्षियों की प्रजातियां बढ़ कर तीन साल में 1600 से भी अधिक हो गई हैं, जोकि पूरे यूरोप में पाई जाने वाली पक्षियों की प्रजातियों की दोगुनी है। यहां 260 से अधिक खास पक्षियों की प्रजातियां पाई जाती हैं, जो पर्यटकों को आकर्षित कर रही हैं।

किसानों को पक्षी अभ्यारण्य विकसित करने में आम लोग व सरकार भी मदद कर रहे हैं। पाज डी लास एवेर्स बर्ड रिजर्व के मालिक रोड्रिगो ने अपने डेयरी फार्म को एक बर्ड रिजर्व में बदलने की कोशिश की, तो उन्हें दुनिया भर के लोगों ने मदद की। लोगों ने उनके बेटे विनीसियो के वैश्विक क्राउडफंडिंग अभियान में 1 करोड़ 37 लाख रुपए की मदद की। उनके इस बर्ड रिजर्व में 5 प्रजातियों के एंटपिट्टा पक्षियां पाई जाती हैं, जो पर्यटकों को खास समय पर ही दिखती हैं।

पर्यटन सलाहकार एंजेला ड्रेक के अनुसार यह एक नया और स्थायी मॉडल है, जो किसानों को आर्थिक और पर्यावरणीय दोनों लाभ देता है। वे कहती हैं, इक्वाडोर में पक्षी पर्यटन का उभरता हुआ चेहरा किसानों के जीवन में एक नई उम्मीद लेकर आया है। खेती छोड़ कर पक्षी अभ्यारण्य बनाने का मॉडल अन्य देशों के किसानों के लिए भी एक प्रेरणा है, जो किसान अपनी भूमि के सहयोग में स्थायी और लाभदायक विकल्प अपनाना चाहते हैं।

पशुओं को लू लगने के कारण दूध उत्पादन हो सकता है कम

बचाव के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाएं, हरा चारा खिलाएं

गर्मी में पशुओं के प्रति लापरवाही पशुपालकों को भारी पड़ सकती है। लू लगने पर पशुओं का जहां दूध उत्पादन कम हो सकता है, वहीं वह बीमारी से भी ग्रस्त हो सकते हैं। केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सज्जन सिंह ने कहा कि जरा सी देखभाल कर पशुओं को लू से बचाया जा सकता है। दरअसल, हर साल गर्मियों के मौसम में हवा के गर्म थपेड़ों और बढ़ते हुए तापमान से पशुओं में लू लगने का खतरा बढ़ जाता है। लू लगने से पशुओं की त्वचा तो सिकुड़ जाती है साथ ही दुधारू पशुओं का दूध उत्पादन भी घट जाता है। गर्मी के मौसम में पशुपालकों को अपने पशुओं को सुरक्षित रखने के लिए भी सावधान रहने की आवश्यकता होती है। गर्मियों के मौसम में चलने वाली गर्म हवाएं (लू) जिस तरह हमें नुकसान पहुँचाती हैं ठीक उसी तरह ये हवाएं पशुओं को भी बीमार कर देती हैं।

जानिए, पशुओं में लू के लक्षण

❖ लू लगने पर पशु की मुँह से जीभ बाहर निकल जाती है और उसे सही तरह से सांस लेने में कठिनाई होती है।

❖ नक्सीर आने पर पशुओं के मुँह के आस-पास झाग आ जाती है।

❖ लू लगने पर पशु की आँख व नाक लाल हो जाती है। अक्सर पशु की नाक से खून आना शुरू हो जाता है।

❖ पशु को लू लगने पर 106 से 108 डिग्री फारेनहाइट तेज़ बुखार होता है। इसके कारण पशु सुस्त होकर खाना-पीना छोड़ देता है।

❖ धड़कन तेज़ हो जाती है और उसे सांस लेने में कठिनाई का अनुभव होता है। पशु चक्कर खाकर गिर जाता है तथा मर भी जाता है।

ऐसे करें बचाव

❖ पशु बाड़े में शुद्ध हवा जाने एवं दूषित हवा बाहर निकलने के लिए रोशनदान होना चाहिए।

❖ गर्म दिनों में पशु को दिन में नहलाना चाहिए। भैंसों को ठंडे पानी से नहलाना चाहिए।

❖ पशु को ठंडा पानी पर्याप्त मात्रा में पिलाना चाहिए। पशुओं को टीन के नीचे नहीं बांधना चाहिए।

❖ गर्मी के मौसम में पशुओं को हरा चारा अधिक मात्रा में देना चाहिए।

ये भी जानें

❖ सूखी त्वचा, कोई पसीना नहीं।

❖ शरीर में कोई हलचल नहीं व बेहोशी जैसी स्थिति।

❖ बहुत तेज़ बुखार।

❖ यदि तुरन्त इलाज ना हो तो जानलेवा।

छिलकों की खाद से पौधों को लाभ

फलों से हमें पोषण मिलता है और इनके छिलकों से पौधों को आहार मिलेगा। फलों के छिलकों से बनी खाद पौधों के लिए कितनी फायदेमंद है, इस लेख में जानिए।

हम जो फल खाते हैं, उसका छिलका उतार कर फेंक देते हैं, जबकि इन छिलकों में कई ऐसे पोषक तत्व होते हैं, जो पौधों के लिए बहुत फायदेमंद हैं। इनका इस्तेमाल कर पौधों के लिए उपयोगी खाद बनाई जा सकती है। इस खाद से ना केवल पौधा स्वस्थ रहता है, बल्कि फूल व फल भी अच्छे फलते हैं। इस खाद को आप घर में ही बना सकते हैं।

केले के छिलके

इनमें पोटाशियम, मैग्नीशियम और कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। इसकी खाद मिट्टी में सूक्ष्म पोषक तत्व (माइक्रोन्यूट्रिएंटस) की मात्रा बढ़ाने के साथ फूल व फलों का उत्पादन बढ़ाती है।

प्रयोग का तरीका : एक लीटर पानी में दो केले के छिलके चार दिनों तक छोड़ दें। उसके पश्चात् छिलकों को निकाल दें और शेष बचा हुआ तरल भाग खाद के रूप में उपयोग करें। इसे पौधों की जड़ों के पास और पत्तियों पर छिड़कने से पौधे की वृद्धि तीव्र गति से होती है। फूल व फल ज्यादा मात्रा में लगते हैं।

आम के छिलके

आम के छिलकों में विटामिन ए, बी, कॉपर और फाइबर पाया जाता है। इसके प्रयोग से पौधों का विकास बहुत तीव्र गति से होता है।

प्रयोग का तरीका : दो-तीन आम के छिलकों को बारीक काट कर उसे एक लीटर पानी में डाल दें और दो दिन तक रहने दें। इसे छान लें। इसमें दो लीटर साफ पानी मिला कर चार से छह सप्ताह में एक बार छिड़काव करने से पौधों के फूल व फल झड़ते नहीं हैं।

नींबू के छिलके

नींबू के छिलके पौधों में पोषक तत्वों की पूर्ति करते हैं। इनको मिट्टी में पाऊडर के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग का तरीका : नींबू के छिलकों को बारीक पीस कर पाऊडर बना लें। पांच से सात सप्ताह में एक मुट्ठी प्रति पौधा डालने से पत्तियों में हरापन बढ़ता है और पौधे का विकास तीव्र गति से होता है। कीट व्याधियों का प्रकोप नहीं होता।

संतरे के छिलके

ये पौधे के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। इनमें पोटाश, लोहा, जस्ता और साइट्रिक पाया जाता है। यह पौधे में सूक्ष्म पोषक तत्वों की पूर्ति करता है। इसे प्राकृतिक कीटनाशक के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

प्रयोग का तरीका : एक लीटर पानी में दो-तीन संतरे के छिलके डाल कर तीन दिन तक छोड़ दें। फिर इसे छान कर इसमें तीन लीटर साफ पानी मिला कर पौधों की पत्तियों और जड़ों के आस-पास छिड़कें। इससे पौधों में शीघ्र फूल व फल लगते हैं और कीट व्याधियों का प्रकोप भी कम होता है।

सेब के छिलके

इनमें पोटाशियम, आयरन, विटामिन-सी और कैल्शियम पाए जाते हैं। ये पौधों की बढ़वार के लिए बेहद आवश्यक है।

प्रयोग का तरीका : दो-तीन सेब के छिलकों को आधा लीटर पानी में मिला कर पीस लें। इसमें एक लीटर पानी मिला कर छह से आठ सप्ताह में एक बार प्रयोग करने से पत्तियों की बढ़वार तीव्र गति से होती है। फूल और फल ज्यादा लगते हैं।

डॉ. आशीष श्रीवास्तव,
कृषि विशेषज्ञ

------ विसंगतियों का विकास ------

तरक्की की दौड़ में पिछड़े वंचितों की हो फिक्र

भारत ने अपनी अभूतपूर्व तरक्की से पूरी दुनिया को चौंकाया है। रिजर्व बैंक ने विकास दर का अनुमान 7.6 प्रतिशत लगाया था और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने 6.8 प्रतिशत। लेकिन राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के जो आंकड़े सामने आए हैं, वे इससे कहीं अधिक हैं। हालिया अंतर्राष्ट्रीय सर्वे बताता है कि भारतीयों को अपना भविष्य सुरक्षित होने का भरोसा है। लेकिन जब वैश्विक संस्थाएं कहती हैं कि देश में खरबपतियों की संख्या अत्यधिक बढ़ी है मगर गरीबों की हालत में कोई सुधार नहीं आया तो कई सवाल जन्म लेते हैं। ग्लोबल हंगर इंडेक्स में भारत की स्थिति स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली और शिक्षा के पिछड़ेपन पर तो स्वदेशी संस्था 'असर' में भी रिपोर्ट परेशान करने वाली है। दरअसल, डिजिटलीकरण व कृत्रिम मेधा में तरक्की के दावों के बीच भारतीय युवा वर्ग के शैक्षिक स्तर में गिरावट चिंता बढ़ाने वाली है।

यही वजह है कि बेरोजगारों की संख्या में कमी नहीं आई। वे अनुकम्पा के बल पर जीते नजर आने लगे और जहां नौकरियां बढ़ी थीं, वहां तमाम तरह की विसंगतियां हैं। भारत में अनियमित रोजगार और करोड़ों लोगों का अनिश्चित जीवन बड़ी चुनौती है। विडंबना है कि देश तरक्की की दौड़ में मजदूर, किसान और कामगार नहीं भाग पा रहे। उन्हें महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से भी जूझना पड़ रहा है। आज भी बड़ी चुनौती बेरोजगारी और महंगाई ही है। तंत्र की विफलता के कारण देश का मूल्यवान श्रमबल पलायन करने के लिए विवश हो रहा है।

अब जब देश में सत्ता की नई पारी शुरू होने जा रही है तो प्राथमिकता देनी होगी कि इकोनॉमिक मॉडल में वे परिवर्तन लाए जाएं जो आम आदमी के जीवन में भी बदलाव लाए। निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के साथ ही बेकारी, महंगाई, और भ्रष्टाचार को भी दूर करने का प्रयास करें। एक संतुलन बनाना पड़ेगा निजी क्षेत्र की तरक्की के साथ-साथ आम और कमजोर लोगों के जीवन स्तर में सुधार के लिये। हमारी जीएसटी का प्रयोग भी सफल रहा है और हमारी टैक्स क्लेक्शन 19 प्रतिशत तक बढ़ी है। यह लाभ आम आदमी से जुड़ी विकास योजनाओं में नजर आए।

निजी क्षेत्र की तरक्की के साथ कम्पनियों का रिकार्ड मुनाफा भी 14 प्रतिशत हो गया, जो पिछले सालों में 10 प्रतिशत था। देश में आठ प्रमुख सेक्टर हैं। इनमें से केवल मैन्युफैक्चरिंग और खनन क्षेत्र में ही यह असाधारण ग्रोथ देखने को मिल रही है। कृषि की विकास दर तो बहुत कम हो गई है। जहां 2022-23 में यह विकास दर 4.7 प्रतिशत थी, वहां 2023-24 में यह 1.4 प्रतिशत रह गई है। ट्रेड, होटल और परिवहन का विकास 2022-23 में 12 प्रतिशत तक हो गया था, अब 2023-24 में 6.4 प्रतिशत रह गया। कहने को ग्रामीण उपभोक्ता मांग बढ़ गई है लेकिन याद रखिए, यह साधारण दो एकड़ की खेती करने वाले आम किसान की नहीं, उस मध्यवर्गीय और धनी किसान की है, जिसे बढ़ती उत्पादकता और अंतर्राष्ट्रीय तनाव के कारण पैदा हुई अधिक कीमतों से लाभ हुआ। भारत में नया उभरता हुआ मध्यवर्ग तो अपनी जेब से बाहर जाकर भी खर्च कर रहा है। भारत की मौद्रिक नीति में महंगाई को नियंत्रित करने के लिए रैपो रेट को बार-बार बढ़ाने की ओर जो कदम उठाए गए, उनके बावजूद मध्यवर्ग ने अपनी ऋण लेने की तत्परता कम नहीं की। महंगे फ्लैटों और महंगी गाड़ियों की मांग उभरकर सामने आ रही है। सरकार ने भी विकास दर बढ़ाने के लिए पूंजीगत निवेश 10 लाख करोड़ रुपये तक बढ़ा दिया, जो उससे पिछले वर्ष से 37 प्रतिशत ज्यादा था। इसके द्वारा हमने देशभर में नई सड़कों और पेयजल हेतु बुनियादी सुविधाएं जुटाईं। इधर अधिक उत्पादकता के कारण चावल, गेहूं जैसे अनाज का बफर स्टॉक भी बढ़ा है। इसके साथ महंगाई को काबू रखने की कोशिश की गई।

दो-तीन वर्ष में भारत के तीसरी वैश्विक आर्थिक शक्ति बनने के दावे किये जा रहे हैं। दावे तो हैं कि देश दो दशक बाद एक विकसित राष्ट्र होगा। अगर हमारी जीडीपी विकास दर इसी तरह गतिमान रही तो शायद हम अपने विकास के लक्ष्य हासिल कर लेंगे।

लेकिन इन आंकड़ों की महक से प्रफुल्लित होने के साथ-साथ हम यह भी याद रखें कि कृषि प्रधान देश भारत में कृषि अपेक्षित तरक्की नहीं कर पाई। भारत में पर्यटन की अकूत संभावनाओं के बावजूद हम पर्यटन विस्तार की कसौटियों पर पूरी तरह से खरे नहीं उतर पाए हैं। इसके साथ यह तरक्की आश्वस्त तो कर सकती है कि आरबीआई ब्रिटेन से 100 टन सोना भारत ले आया, जो देश की आर्थिक संप्रभुता के लिये उत्साहवर्धक खबर है। असल विकास तो तब होगा जब देश की सुप्त सम्पदा का भी उत्पादक और विकासशील उपयोग होना शुरू हो जाएगा। सोने पर जारी किए गए विकास बांड में धनकुबेरों से लेकर आम जनता का निवेश इस दिशा में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। देश का विकास समतामूलक व आर्थिक विषमता को दूर करने वाला होना चाहिए।

सुरेश सेठ

“यह तार्किक तथ्य है कि यदि हम गंगा को साफ करने में सक्षम हो गए तो यह देश की 40 फीसदी आबादी के लिए एक बड़ी मदद साबित होगी। हम इस दृष्टि से विचार करें कि भारत जैसी भौगोलिक और वैचारिक भिन्नता वाले देश में पानी को लेकर कोई आम सहमति विकसित करना आसान नहीं है। यह भी कि भारत में पानी राज्य का विषय है। लिहाजा, खासतौर पर नदियों को लेकर किसी यूनिफाइड प्रोजेक्ट पर सहमति के साथ आगे बढ़ना चुनौतीपूर्ण है।”

जल संकट

सरकार-समाज के साझे प्रयासों से ही समाधान

प्रेम प्रकाश

चढ़ते पारे के बीच पानी की समस्याओं को लेकर सरकार की नीति और दृष्टि को लेकर कुछ बातें स्पष्ट होनी चाहिए। निरूसंदेह, नदी और जल संरक्षण की दिशा में होने वाले प्रयास ज्यादा प्रभावी होने चाहिए। यह अपेक्षा बीते एक दशक में देश में पानी से जुड़ी उपलब्धियों पर सवाल ही नहीं उठाती, बल्कि इससे उम्मीदें और मजबूत होती हैं। आज जो स्थिति है उसमें अब सरकारों के लिए पानी मसला नहीं, बल्कि मिशन होना चाहिए। वैसे भी पानी आज

वैश्विक मुद्दा है। बीते कुछ दशकों में जल संरक्षण को लेकर विश्व मानचित्र पर कई मॉडल उभरे हैं। बदलाव के इस सफर के एक छोर पर सिंगापुर जैसा छोटा मुल्क है, तो दूसरे छोर पर भारत जैसी विशाल आबादी और भूगोल वाला देश।

बहरहाल, बात पहले सिंगापुर की। दुनियाभर में सैर-सपाटे के लिए सबसे पसंदीदा ठिकाने और बिजनेस डेस्टिनेशन के रूप में सिंगापुर का नाम पूरी दुनिया में है। तीन दशक पहले जब डिजिटलीकरण का जोर बढ़ा तो दुनिया भर की कंपनियों ने अपने उत्पाद को यहीं से तमाम देशों में भेजना और प्रचारित करना सबसे बेहतर माना। लेकिन सिंगापुर की एक दूसरी पहचान भी है, जो ज्यादा प्रेरक है, ज्यादा मौजू है। आने वाले चार दशकों के लिए आज सिंगापुर के पास पानी के प्रबंधन को लेकर ऐसा ब्लूप्रिंट है, जिसमें जल संरक्षण से जल शोधन तक पानी की किफायत और उसके बचाव को लेकर तमाम उपाय शामिल हैं। सिंगापुर की खास बात यह भी है कि उसका जल प्रबंधन शहरी क्षेत्रों के लिए खास तौर पर मुफीद है।

गौरतलब है कि सिंगापुर के सामने लंबे समय तक यह सवाल रहा कि एक शहर-राष्ट्र, जिसके पास न तो कोई प्राकृतिक जल इकाई है, न ही पर्याप्त भूजल भंडार है, उसके पास इतनी भूमि भी नहीं कि वह बरसात के पानी का भंडारण कर सके। ऐसे में गंदे पानी के शुद्धीकरण, समुद्री जल का खारापन कम करने और वर्षा जल के अधिकतम संग्रह के साथ सिंगापुर ने पानी से जुड़ी अपनी जरूरतों को पूरा करने का एक ऐसा मॉडल तैयार किया, जो एडवांस्ड टेक्नोलसॉजी के साथ सामाजिक बदलाव की एक बड़ी मिसाल है।

सिंगापुर से भारत सीख तो सकता है, पर हमारे देश की आबादी और भूगोल ज्यादा मिश्रित और व्यापक है। लिहाजा पानी को लेकर भारतीय दरकार और सरोकार भी खासे भिन्न हैं। इसे भारतीय राजनीति में प्रकट हुए सकारात्मक बदलाव के साथ सरकारी स्तर पर आई नई योजनागत समझ भी कह सकते हैं कि अब स्वच्छता और घर-घर टोंटी से पानी की पहुंच जैसा मुद्दा साल के एक या दो दिन नारों-पोस्टरों से आगे सरकार की घोषित प्राथमिकता है।

यह तार्किक तथ्य है कि यदि हम गंगा को साफ करने में सक्षम हो गए तो यह देश की 40 फीसदी आबादी के लिए एक बड़ी मदद साबित होगी। हम इस दृष्टि से विचार करें कि भारत जैसी भौगोलिक और वैचारिक भिन्नता वाले देश में पानी को लेकर कोई आम सहमति विकसित करना आसान नहीं है। यह भी कि भारत में पानी राज्य का विषय है। लिहाजा, खासतौर पर नदियों को लेकर किसी यूनिफाइड प्रोजेक्ट पर सहमति के साथ आगे बढ़ना चुनौतीपूर्ण है।

देश में सरकारों की योजनागत समझ और प्रतिबद्धता में दिखी कमजोरी ही रही कि आस्था से लेकर अर्थव्यवस्था तक के लिए महत्वपूर्ण नदियों को केंद्र में रखकर दशकों तक कोई बड़ा निर्णायक कदम नहीं उठाया गया। पानी को लेकर काम कर रहे तमाम विभागों को साथ लाकर 2019 में जल शक्ति मंत्रालय के गठन के बाद जल क्षेत्र में हम काफी आगे बढ़े हैं। यह बढ़त गंगा सहित कई नदियों के कायाकल्प से जुड़े प्रयासों से लेकर अमृत सरोवर मिशन तक कई स्तरों पर सफलता के आंकड़ों के रूप में सामने है।

नमामि गंगे दस साल की यात्रा पूरा कर रही है। भारतीय वन्यजीव संस्थान की ओर से 2020 से 2023 तक किए गए सर्वे में गंगा और उसकी सहायक 13 नदियों में 3936 डॉल्फिन मिली है। यह देश में नदी जल की शुद्धता की बेहतर हुई स्थिति को दर्शाता है। यही नहीं, नमामि गंगे को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा चलाए गए एक ग्लोबल मूवमेंट के तहत टॉप 10 वर्ल्ड रेस्टोरेशन फ्लैगशिप में स्थान दिया गया है।

आज देश में 14.85 करोड़ से ज्यादा ग्रामीण परिवारों तक नल से शुद्ध जल पहुंच रहा है। नोबेल विजेता प्रोफेसर माइकल क्रेमर के एक शोध के मुताबिक सभी ग्रामीण परिवारों तक कवरेज के साथ जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन से बाल मृत्यु दर में सालाना 1.36 करोड़ की कमी आएगी। साफ है कि पानी के साथ मनमानी के खतरे को समझते हुए देश आज जरूरी जवाबदेही और समझदारी के दौर में है। जल संरक्षण को लेकर समाज और सरकार का एक सीध में आगे बढ़ना न सिर्फ कारगर रहा है, बल्कि यह भविष्य के खतरों के लिहाज से भी जरूरी पहल है। ❑

बासमती को झंडा रोग से बचाने के लिए करें बीजोपचार

तरनतारन, गुरदासपुर, अमृतसर, कपूरथला के बाद मालवा के किसान भी देने लगे बासमती को तवज्जो

देश-विदेश में पंजाब की बासमती की विशेष पहचान के चलते किसान धान की बजाय इसकी तरफ अधिक आकर्षित हो रहे हैं। यहां मौनसून की आमद के पहले का लंबे दिनों वाला गर्म मौसम इसकी खेती के लिए बहुत अनुकूल है। पकाने के गुण, खाने के विशेष स्वाद व महक के कारण यहां की बासमती विश्व भर में पसंदीदा अनाज है।

सूबे के सीमावर्ती ज़िलों तरनतारन, गुरदासपुर, श्री मुक्तसर साहिब व कपूरथला के बाद अब मालवा के किसान भी पकने में अधिक समय लेने वाले परमल धान की बजाय बासमती के अधीन क्षेत्रफल बढ़ा रहे हैं। जून का प्रथम सप्ताह इसकी पनीरी लगाने का उचित समय है। ज़िला कृषि अधिकारी डॉ. अमरीक सिंह ने बताया कि परमल के मुकाबले पानी की कम खपत वाली बासमती की संभाल व काश्त सस्ती होने के चलते यह लाभप्रद फसल बन रही है। मगर बासमती की फसल के निचले हिस्से के गलने यानी झंडा रोग (फंगस रोग) पूसा-1121 व पूसा-1509 का सबसे अधिक नुकसान कर सकती है। शुरूआती दिनों में लगने वाली यह बीमारी फसल का काफी नुकसान कर सकती है। बासमती की फसल को झंडा रोग से बचाने हेतु पनीरी की बुवाई के समय ही उपाय करना अनिवार्य है। उनके अनुसार, फंगस पनीरी की बुवाई के तुरन्त बाद बीज के अंकुरित होते समय जड़ अथवा तने के माध्यम से पौधों में दाखिल होती है। बीमारी से प्रभावित पौधे तंदुरुस्त पौधों के मुकाबले अधिक तेज़ी से बढ़ते व ऊंचे होते हैं। इस फंगस से बचाव के लिए पनीरी की बुवाई से पहले खेत को सही ढंग से तैयार करना व बीज को फंगसरोधी दवाओं से शोधित करना जरूरी है।

जैविक तकनीक - छाया में सुखाया जाता है बीज

इस तकनीक से बीजोपचार के लिए 15 ग्राम ट्राईकोडर्मा हर्जीएनम प्रति किलो बीज के हिसाब से डाला जाता है। 120 ग्राम ट्राईकोडर्मा हर्जीएनम का लेप तैयार किया जाता है। इसे 8 किलो बीज पर लेप कर छाया में सुखाना चाहिए। अच्छी तरह सुखाने के बाद खेत में रूड़ी की खाद डाल, हल चलाकर इसे मिट्टी में मिला कर खेत को पानी लगाना चाहिए, जिससे पनीरी समय पर व अच्छे ढंग से तैयार हो सके। इसके अलावा पनीरी के तैयार होने के बाद रोपाई से पहले 15 ग्राम ट्राईकोडर्मा हर्जीएनम प्रति लीटर पानी में घोल कर पनीरी की जड़ों को इसमें छह घंटे डुबोने के बाद रोपाई के अच्छे परिणाम मिलते हैं।

रासायनिक तकनीक भी है कारगर

इस तकनीक में बुवाई से पहले 3 ग्राम मैनकोजिब व कार्बेन्डाजिम रासायनिक मिश्रण 75 डब्ल्यू. एस. को 10 मिलनीलीटर पानी में घोल कर प्रति किलोग्राम बीज पर लेप करना चाहिए। संशोधित बीज को 7-8 सैंटीमीटर मोटी टाट व जूट की बोरी पर बिखेर कर, ऊपर से गीली बोरी डाल समय-समय पर पानी का छिड़काव करने से बीज 24 से 36 घंटे के बीज अंकुरित हो जाता है। इस बीज को 8 किलो प्रति 160 वर्गमीटर क्षेत्रफल के हिसाब से अच्छी पनीरी तैयार की जा सकती है। पक्षियों से इस बीज को बचाने के लिए इस पर रूड़ी की खाद का सामान छिड़काव कारगर हो सकता है। बासमती बीज की बुवाई के लिए उपयुक्त समय वह रहता है, जब दिन की लम्बाई ज्यादा हो अर्थात् बीज को ज्यादा से ज्यादा समय सूर्य की रोशनी मिल सके। अच्छी फसल के लिए कृषि विभाग के अधिकारियों से सलाह लेते रहें।

धनेशा क्रॉप साइंस प्रा.लि. ने भारत में मेटालोसेट टैक्नोलॉजी लांच करने के लिए बाल्केम (यू.एस.ए.) के साथ हाथ मिलाया

धनेशा ने किसानों के लिए लांच किए अति-आधुनिक उत्पाद

एग्रोकेमिकल इंडस्ट्री में अग्रणी कम्पनी धनेशा क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने गत् दिनों पंचकूला में अपने चैनल पार्टनर्स के साथ विश्वास और साझेदारी को मजबूत बनाने के लिए ग्रैंड डिस्ट्रीब्यूटर मीट की मेजबानी की और एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान कम्पनी ने किसानों के लिए कुछ उन्नत प्रौद्योगिकी उत्पाद भी लांच किए। बता दें कि धनेशा कम्पनी ने हाल ही में उद्योग में अपना पहला वर्ष पूरा किया है। भारत में कृषि पद्धतियों में क्रांति लाने के लिए कम्पनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हुए कार्यक्रम के दौरान नए उत्पादकों का अनावरण किया गया।

इस कार्यक्रम में कम्पनी के प्रबंध निदेशक श्री धर्मेश गुप्ता, उत्तर क्षेत्र प्रमुख श्री आदेश कुमार, पंजाब क्षेत्रीय प्रमुख और हरियाणा क्षेत्रीय प्रमुख ने अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ाई। साथ ही कार्यक्रम में क्षेत्रीय प्रमुखों से भाग लेने वाले सभी व्यवसायिक भागीदारों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत संबंधित राज्यों की संक्षिप्त टीम परिचय के साथ हुई।

कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए श्री धर्मेश गुप्ता ने प्रतिभागियों को कम्पनी के इतिहास, संरचना, उपस्थिति के बारे में जानकारी दी। संबोधन के दौरान उन्होंने अपने विचार और बहुमूल्य सुझाव सांझा किए। इसके अलावा उन्होंने सभी वितरकों और हितधारकों के प्रति अटूट समर्थन और विश्वास के लिए भी आभार व्यक्त किया। उन्होंने नवीन तकनीकों के प्रभावी उपयोग से किसानों को समृद्धि लाने के लिए कम्पनी की दृढ़ प्रतिबद्धता को दोहराया।

कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण धनेशा और बाल्केम के बीच रणनीतिक गठबंधन रहा। बाल्केम एक प्रसिद्ध अमेरिकी कम्पनी है, जो कृषि जैव प्रौद्योगिकी में विशेषज्ञता के साथ दुनिया की स्वास्थ्य और पोषण संबंधी जरूरतों के लिए अपनी तकनीक और अभिनव समाधानों के लिए जानी जाती है। बाल्केम के प्रतिष्ठित सदस्य श्री जेरेमी, ग्लोबल सेल्स हैड और श्री संजीव जैन, बिज़नेस एडवाइजर (भारत) ने कार्यक्रम में शिरकत की। ये दोनों ही कम्पनियों के बीच मज़बूत बंधन का प्रतीक हैं, जोकि कम्पनियों के साझा दृष्टिकोण का उदाहरण है।

श्री जेरेमी ने बाल्केम की विशेषज्ञता से अवगत करवाया और साझेदारी के बारे में अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा कि, "यह साझेदारी कृषि क्षेत्र में सकारात्मक बदलव लाने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है। यह सहयोग कृषि पद्धतियों में क्रांतिकारी बदलाव लाने में महत्वपूर्ण साबित हो सकता है, जिससे भारत भर में कृषि परिदृश्य में कृषि समृद्धि का नए दया युग शुरू होगा।"

श्री संजीव जैन ने उत्पादों के तकनीकी पहलुओं से अवगत करवाया और बहुत ही सरल तरीके से उत्पाद के महत्व के बारे में बताया। इस सहयोग ने किसानों को अभिनव समाधानों के साथ सशक्त बनाने और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को सुनिश्चित करने की उनकी यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ। यह गठबंधन कृषि समद्धि के एक नए युग की शुरूआत करते हुए दोनों संस्थाओं की संयुक्त शक्तियों का लाभ उठाएगा।

कम्पनी ने नए और उन्नत अत्याधुनिक उत्पाद किए पेश

कार्यक्रम के दौरान धनेशा क्रॉप साइंस प्राइवेट लिमिटेड ने अपने नए और उन्नत अत्याधुनिक उत्पादों को पेश किया, जो फसलों को कीटों के संक्रमण, बीमारी, खरपतवारों से बचाने और फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। इस कार्यक्रम में बायो पेस्टीसाइड्स का लांच मुख्य आकर्षण था, क्योंकि यह स्थिरता की भावना को दर्शाता है। बाल्केम के सहयोग से उन्नत उत्पादों ने कम्पनी के तेज़ी से बढ़ते तकनीकी युग के साथ संरेखण परध्यान केन्द्रित किया। धनेशा अब अपने व्यापक पोर्टफोलियो के साथ किसानों को सर्वांगीण फसल समाधान प्रदान करता है और देश के कृषि परिदृश्य को मज़बूत करता है। यह कार्यक्रम अपने वितरकों, हितधारकों और किसानों के प्रति कम्पनी की प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

धनेशा क्रॉप साइंस की स्थापना वर्ष 2022 में आधुनिक कृषि के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान देने के उद्देश्य से की गई थी। इस छोटी सी अवधि में उन्होंने बाज़ार और किसानों के बीच एक मज़बूत उपस्थिति बनाई है। उनके उत्पाद की गुणवत्ता ग्राहक के बीच बेहद लोकप्रिय है। कम्पनी पहले से ही सौ से अधिक कर्मचारियों का परिवार है और पूरे देश में 2000 से अधिक चैनल भागीदारों के साथ साझेदारी की है और यह संख्या तेज़ी से बढ़ रही है। अनुभव और विशेषज्ञता के साथ, उन्होंने शाकनाशी, कीटनाशक, कवकनाशी, पी.जी.आर. सहित उत्पादों की विस्तृत श्रृंखला का एक पोर्टफोलियो तैयार किया और अब वे पूर्ण समाधान और बेहतर कल के लिए पोषण आधारित उत्पादों और जैव कीटनाशकों को शामिल करने के लिए इसका विस्तार कर रहे हैं।

आधुनिकता की दौड़ में पर्यावरण को खतरे में धकेलता समाज

हमारी धरती, जनजीवन को सुरक्षित रखने के लिए पर्यावरण का सुरक्षित रहना बहुत जरूरी है। विश्व के देश आधुनिकता की ओर बढ़ रहे है लेकिन इस राह में दिनों-दिन दुनियाभर में ऐसी चीजों का इस्तेमाल बढ़ गया है और इस तरह से लोग जीवन जी रहे हैं, जिससे पर्यावरण खतरे में है। इंसान और पर्यावरण के बीच गहरा संबंध है।

प्रकृति के बिना जीवन संभव नहीं। ऐसे में प्रकृति के साथ इंसानों को तालमेल बिठाना होता है। लेकिन लगातार वातावरण दूषित हो रहा है, जिससे कई तरह की समस्याएं बढ़ रही हैं, जो हमारे जनजीवन को तो प्रभावित कर ही रही हैं, साथ ही कई तरह की प्राकृतिक आपदाओं की भी वजह बन रही हैं। सुखी-स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण का संरक्षण जरूरी है। इसी उद्देश्य से हर साल 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इस दिन लोगों को पर्यावरण के प्रति सचेत और पर्यावरण को संरक्षित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

हम देशवासियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक होना चाहिए और इस दिन प्रत्येक व्यक्ति एक पौधा अवश्य लगाएं, ताकि पर्यावरण को बचाया जा सके। आज देश भर में युवा पीढ़ी अपना जन्मदिन और मैरिज एनिवर्सरी होटल और रैस्टोरैंट में मनाती है, उसका दायित्व बनता है कि इस आधुनिकता की दौड़ को छोड़ कर वह अपने गांव में, शिक्षा संस्थानों या कार्यालयों में इस दिन पौधा अवश्य लगाएं, ताकि वह पर्यावरण को तो स्वच्छ और साफ-सुथरा रखे ही, आपकी यादगार भी बनी रहे।

दुनिया में लगातार प्रदूषण बढ़ रहा है, जिसके कारण प्रकृति पर खतरा बढ़ रहा है, जिसे रोकने के उद्देश्य से पर्यावरण दिवस मनाने की शुरूआत हुई। भारत भी पर्यावरण संरक्षण को लेकर गंभीर है, इसी कारण भारत ने एक कानून बनाया है। इसके तहत 19 नवम्बर, 1986 को पर्यावरण संरक्षण अधिनियम लागू किया गया था। जब पहली बार विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा था, तो भारत में भी मनाया गया।

हर वर्ष इस दिन के लिए एक थीम जारी किया जाता है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस का थीम है 'लैंड रेस्टोरेशन, डैजर्टीफिकेशन एंड ड्राउट रीसीलिएंस'। पर्यावरण को साफ-सुथरा रखना हम सब नागरिकों का कर्त्तव्य है, लेकिन मनुष्य अपने निजी स्वार्थ हेतु पर्यावरण को लंबे समय से प्रदूषित तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर रहा है। मनुष्य के इस कृत्य के कारण प्रकृति विनाश की तरफ बढ़ रही है और मनुष्य को पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जंगलों में आग लगना या आग लगाना पर्यावरण को जहां दूषित कर रहा है, वहीं जीव-जंतु या वन्य प्राणी विलुप्त हो रहे हैं, जिसके चलते जंगलों में जड़ी-बूटियां भी नष्ट हो रही हैं। किसी ने ठीक ही कहा है कि एक देश, जो अपने इतिहास को खत्म कर देता है, वह अपने आप को नष्ट कर देता है। जंगल हमारी ज़मीन के फेफड़े हैं, जो हमें शुद्ध हवा प्रदान करते हैं। अगर जंगल नहीं होंगे, तो हम सब खत्म हो सकते हैं।

आज हमें पर्यावरण आंदोलनकारियों को भी नहीं भूलना चाहिए, जिन्होंने पर्यावरण की रक्षा करते-करते अपना बलिदान दे दिया। राजस्थान में बिश्नोई पंथ के लोगों का बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिसके सैंकड़ों लोगों ने अपनी जान देकर पेड़ों की रक्षा की थी। उसी तरह से चिपको आंदोलन भी पर्यावरण का एक हिस्सा है, जहां महिलाएं पेड़ों से चिपक गई थीं और ठेकेदार को पेड़ों को काटने के लिए मना कर दिया था।

हमें उनके योगदान को नहीं भूलना चाहिए। आओ मिलकर पर्यावरण दिवस मनाएं, इस धरती को सबके जीने योग्य बनाएं। अगर हम पेड़ों को ऐसे ही काटते रहे, तो वह दिन दूर नहीं, जब तापमान 60 डिग्री तक पहुंच जाएगा और मनुष्य झुलसने लग पड़ेगा। इसलिए हमें सरकारों पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए कि वह कोई कानून बनाए, हम खुद पेड़ों की रक्षा करें और अधिक से अधिक पौधारोपण करें।

प्रो. मनोज डोगरा